

---

# Shri Raghavendra Pratikulasvanukulikarana Stotram

---

## श्रीराघवेन्द्रप्रतिकूलस्वानुकूलीकरणस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Shri Raghavendra Pratikulasvanukulikarana Stotram

File name : rAghavendrpratikUlasvAnukULikaraNastotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Krishna Avadhutapandita Vedavyasacharya

Proofread by : Gopalakrishnan, PSA Easwaran

Description/comments : from Raghavendra Tantram

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 18, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीराघवेन्द्रप्रतिकूलस्वानुकूलीकरणस्तोत्रम्



श्रीभूपे कूपे सुखवारां कृतचित्तं  
चित्ते त्वां ध्यायामि च भूयोऽहममत्तः ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ १ ॥

राष्ट्रे राष्ट्रे ख्यातयशस्तोम विभासिन्  
वासिन् ध्यातुश्चेतसि दातः करुणावान् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ २ ॥

घोरे संसारे पतितोऽहं तव पुत्रः  
कुत्रावेयं त्वामपहाय प्रभुमिष्टम् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ३ ॥

वेदाहं नो सद्गतिहेतुं तव पोतः  
पूतं पादादन्यदृते संसृतिवार्धेः ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारपत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ४ ॥

द्रावं द्रावं नश्यति कष्टं तव दृष्ट्या  
कष्ट्यापं त्वातः कुरु तुष्टं वृषपुष्पम् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारपत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ५ ॥

यत्यतुच्च त्वद्वरेणुं गतमानौ  
दार्यं धार्यं मूर्धनि वार्यन्नदमीढे ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ६ ॥

नाना नाना दैवकदम्बे सविलम्बे  
लम्बे स्मालम्बं सुखदं त्वामविलम्बम् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ६ ॥


मन्त्रं ते मन्त्रालयधामन् भुवि जप्तुः  
पातुः पादाम्भो लघु नश्यत्यतिदुःखम् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ७ ॥

चक्रेऽष्टश्लोकीमवधूतः कविकृष्णः  
तत्पाठेन त्वं भव तुष्टो हर कष्टम् ।  
स्वामिन् भूमन् भो गुरुराज प्रतिकूलं  
दारापत्याद्यं सकलं कुर्वनुकूलम् ॥ ९ ॥


इति श्रीकृष्णावधूतविरचिते श्रीराघवेन्द्रतन्त्रे नवमपटले  
प्रतिकूल-स्वानुकूलीकरणस्तोत्रं नाम सप्तमोऽध्यायः सम्पूर्णः ।

Proofread by Gopalakrishnan, PSA Easwaran

---

——  
*Shri Raghavendra Pratikulasvanukulikarana Stotram*

pdf was typeset on December 18, 2021

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

